अण्डमान निकोबार
द्वीप समाचार

रजि.न.34300/80 | संख्या 156 | श्री विजय पुरम, शनिवार, 13 जून 2026 | web: dt.andamannicobar.gov.in | 2.00 रूपए

प्राथमिक कृषि ऋण समितियों को संतुलित उर्वरक उपयोग हेतु जागरूकता कार्यक्रम

श्री विजय पुरम, 12 जून

राष्ट्रीय स्तर पर चलाए जा रहे "खेत बचाओ अभियान" के अंतर्गत, आईसीएआर–केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर–सीआईएआरआई), श्री विजय पुरम द्वारा 12 जून, 2026 को प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (पीएसीएस) के अध्यक्षों एवं सचिवों के साथ एक संवाद बैठक का आयोजन किया गया। पीएसीएस ग्राम एवं ग्राम पंचायत स्तर पर कार्यरत जमीनी सहकारी ऋण संस्थाएं हैं। बैठक का उद्देश्य सतत कृषि, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन तथा फसल उत्पादकता में वृद्धि के लिए उर्वरकों के संतुलित उपयोग के महत्व के प्रति प्रतिभागियों को जागरूक करना था। संवाद बैठक में छोलदारी सर्विस कोऑपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड, छोलदारी, भारती सर्विस कोऑपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड, फरारगंज, पेमा सर्विस कोऑपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड, टेलराबाद तथा नेताजी सर्विस कोऑपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड, गुप्तपाडा के अध्यक्षों एवं प्रतिनिधियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया और अपने–अपने क्षेत्रों के किसानों के बीच संतुलित उर्वरक उपयोग तथा सतत कृषि पद्धतियों को बढावा देने संबंधी अपने विचार साझा किए।

आईसीएआर–सीआईएआरआई के निदेशक डॉ. जय सुंदर ने मृदा क्षरण को रोकने तथा दीर्घकालिक कृषि स्थिरता बनाए रखने के लिए उर्वरकों के संतुलित एवं विवेकपूर्ण उपयोग की तत्काल आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने रासायनिक इनपुट पर निर्भरता कम करने के लिए जैव उर्वरकों, ट्राइकोडर्मा एवं स्यूडोमोनास जैसे लाभकारी सूक्ष्मजीवों तथा जैविक एवं प्राकृतिक खेती पद्धतियों को बढावा देने की वकालत की। उन्होंने किसानों के बीच वैज्ञानिक जागरूकता के महत्व पर भी विशेष बल दिया। वैज्ञानिकों ने पीएसीएस प्रतिनिधियों एवं किसानों के साथ खरपतवार प्रबंधन के लिए खरपतवारनाशकों के सुरक्षित एवं प्रभावी उपयोग पर भी

संवाद किया। उन्होंने वैज्ञानिक अनुशंसाओं के अनुसार केवल अनुशंसित ग्रीन–लेबल खरपतवारनाशकों के उपयोग की सलाह दी तथा बताया कि इनका खरपतवार नियंत्रण प्रभाव सामान्यतः लगभग 15 से 20 दिनों तक रहता है। प्रतिभागियों को वर्षा के दौरान खरपतवारनाशकों का छिडकाव न करने की चेतावनी दी गई, क्योंकि प्रयोग के तुरंत बाद होने वाली वर्षा उनकी प्रभावशीलता को काफी कम कर सकती है तथा बहाव के माध्यम से पर्यावरण प्रदूषण का कारण बन सकती है।

प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार सीआईएआरआई एवं कृषि विज्ञान केंद्रों (केवीके) द्वारा आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा कौशल विकास पहलों का आयोजन किया जाएगा, ताकि किसानों के उद्यमशीलता संबंधी प्रयासों को समर्थन प्रदान किया जा सके।

इससे पूर्व, कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके), दक्षिण अंडमान के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. वाई. रामकृष्ण ने प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा इस बात पर जोर दिया कि प्राथमिक कृषि ऋण समितियां (पीएसीएस) किसानों को उर्वरकों के संतुलित एवं विवेकपूर्ण उपयोग के प्रति जागरूक करने तथा वैज्ञानिक कृषि पद्धतियों के संबंध में मार्गदर्शन प्रदान करने वाली महत्वपूर्ण जमीनी संस्थाएं हैं। कार्यक्रम का समापन विषय वस्तु विशेषज्ञ श्री मोहित द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।